अप्रैल २०२४

शुल्क प्रति नकल : ₹ २५/-

आक्रमण एक्सप्रेस

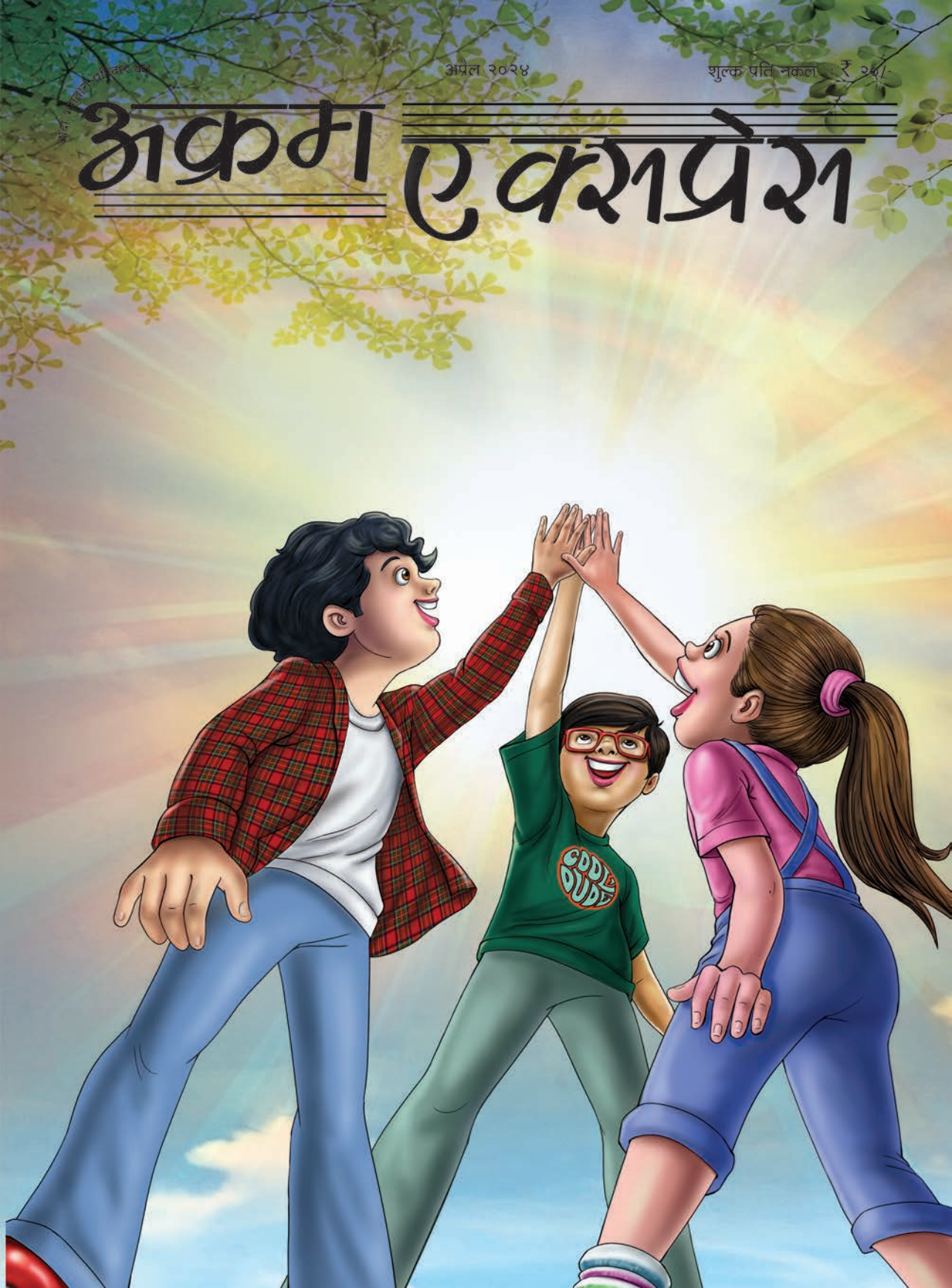

संपादकीय

बालमित्रों,

कैनेडा की कड़कड़ाती ठंड की एक रात, पाँच वर्ष की हेना टेलर ने एक गरीब आदमी को कचरा पेटी में से खाना बीनकर खाते हुए देखा। उसने मन में सोचा कि 'यदि सब लोग अपनी चीज़ें एक-दूसरे के साथ शेर करने लगें तो क्या इस गरीबी का अंत नहीं आ सकता?' आठ वर्ष की उम्र में हेना ने गरीब लोगों की मदद करने के लिए एक फाउन्डेशन की शुरुआत की।

ऐसे किसी काम की हम दिल से प्रशंसा करते हैं और साथ ही 'लोगों को हेल्प मिलनी ही च ाहिए' इस बात को भी सपोर्ट करते हैं। सही है न? कभी-कभी हम नेगेटिव बातों को भी सपोर्ट कर देते हैं। जैसे कि यदि स्कूल में ऐसे व्यक्ति को कोई मार रहा हो जो हमें पसंद ना हो, तो हम मारने वाले व्यक्ति को उसे और अधिक मारने के लिए उकसाते हैं।

इस तरह, पॉज़िटिव या नेगेटिव बात को सपोर्ट करना, वास्तव में क्या कहलाता है?

चलो, ज्ञानी की समझ, कहानियों तथा एक्टिविटिज़ द्वारा इस टॉपिक को समझें और साथ ही, यह भी जानें कि किस बात को सपोर्ट करने में हमारा हित है और किसमें अहित है।

- डिम्पल मेहता

किसे सपोर्ट करना...

वर्ष : १२ अंक: ०१
अखंड क्रमांक: १३३
अप्रैल २०२४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन: ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhtral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

© 2024, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम
एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : किया, करवाया और अनुमोदन करना यानी क्या?

नीरू माँ : किया यानी स्वयं करना, करवाना यानी दूसरों से करवाना और अनुमोदन करना यानी कोई नहीं कर रहा हो तो हम उसे करने के लिए उकसाते हैं कि 'करो, करो, करो मैं हूँ ना', इसे अनुमोदन करना कहते हैं।

एक करता है, दूसरा करवाता है और उसे करने के लिए सपोर्ट करता है वह अनुमोदना कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : जब हम किसी की अनुमोदना करते हैं तो उसका फल क्या मिलता है?

पूज्यश्री : अनुमोदना दो तरह की होती है। एक, अच्छे कार्य के लिए की जाती है और दूसरी, बुरे कार्य के लिए की जाती है।

कोई दान दे रहा हो और आप कहो कि 'भगवान के नाम पर दान देना अच्छा है।' अच्छे कार्य की अनुमोदना से पुण्य बँधा जाता है।

कोई चोरी करता हो और कोई उसे यह कहे कि 'इस सेठ को तो लूटना चाहिए।' इस तरह बुरे कार्य के लिए अनुमोदना करने से पाप बँधा जाता है।

कसाई बकरे काटकर बेचते हैं, इसका उन्हें जो पाप लगता है उससे कहीं अधिक पाप उन्हें लगता है जो लोग माँसाहार की अनुमोदना करते हुए कहते हैं कि 'माँसाहार करना ही चाहिए, यदि नहीं खाएँगे तो अनाज की कमी हो जाएगी।'

चलो खेलें...

नीचे दिए गए गणित के सवाल हल करो। जो जवाब आए उसके आधार से पास में दिए गए कोड के अनुसार चित्र में कलर भरो। और आपके द्वारा कलर किया गया सुंदर सा चित्र हमें भेजना भूलना मत।

९३१३६६६५६२

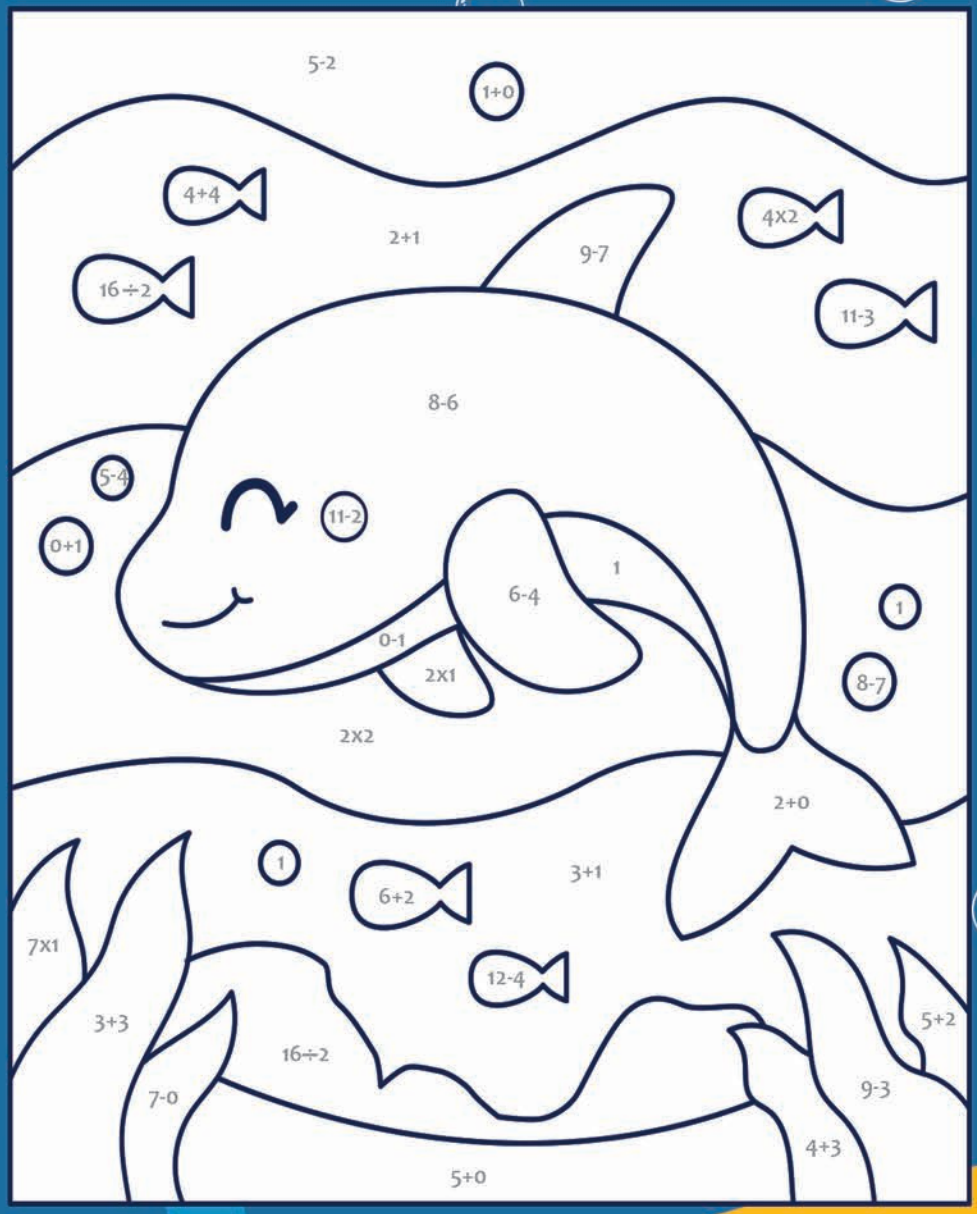

यह तो नई ही बात है!

कोई व्यक्ति लाख रुपये का दान दे रहा हो और दूसरा व्यक्ति नहीं दे पा रहा, लेकिन उसे होता है कि 'धन्य है! कितना अच्छा काम किया!' तब भी एक रुपये का दान देने के भाव का उसने अनुमोदन किया कहा जाएगा।

ऐसी अनुमोदना से दान देने के बराबर ही बीज डल जाते हैं।

उदाहरण के तौर पर : कोई अपनी मनपसंद चीज़ें जैसे कि खिलौने, स्टेशनरी आदि दूसरों को खुशी-खुशी दे देता है और आप मन में ऐसा सोचते हो कि 'कितना अच्छा काम किया, ऐसा करना ही चाहिए' तो आपने 'शेर' के भाव का अनुमोदन किया कहा जाएगा।

इस अनुमोदन का आपको चीज़ देने के बराबर फल मिलेगा।

मैं तुम्हारे साथ ही हूँ...

(यह एक काल्पनिक कहानी है। जैसे हमारे प्लैनिट 'पृथ्वी' में भारत, चीन, अमेरिका आदि देश हैं, वैसे ही यह कहानी 'सुरेनिस' नामक एक काल्पनिक प्लैनिट की है। जिसमें 'ज़ेन्डार' तथा 'डोलोमैक्स' नामक दो देश हैं।)

यूको के दिल की धड़कनें बढ़ गई थीं। बंद लबॉरट्री के बीचों-बीच रखे हुए एक ब्लू-ग्रीन फ्लास्क में उसका प्रयोग चल रहा था। बस, बारह सेकन्ड में रिज़ल्ट आने वाला था।

वैसे तो पंद्रह साल के यूको ने अपनी छोटी सी लाइफ में कई प्रयोग किये थे। सुरेनिस प्लैनिट के दक्षिण दिशा में स्थित ज़ेन्डार देश के लोग यूको को 'लिटल साइन्टिस्ट' के नाम से जानते थे। यूको के एक्सपेरिमन्ट कभी सफल होते तो कभी असफल। लेकिन, उस दिन लाइफ में पहली बार ज़ेन्डार देश के लोगों को यूको की सफलता की सबसे अधिक ज़रूरत थी। एक-एक सेकन्ड निकालना उन्हें कठिन लग रहा था।

अंत में, बारहवीं सेकन्ड में रिज़ल्ट आया और यूको की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे ऐसा लगा मानो उसने युद्ध में जीत हासिल कर ली हो। और वैसे देखा जाए तो सचमुच में युद्ध में विजय पाने के लिए ही तो यूको ने यह प्रयोग किया था।

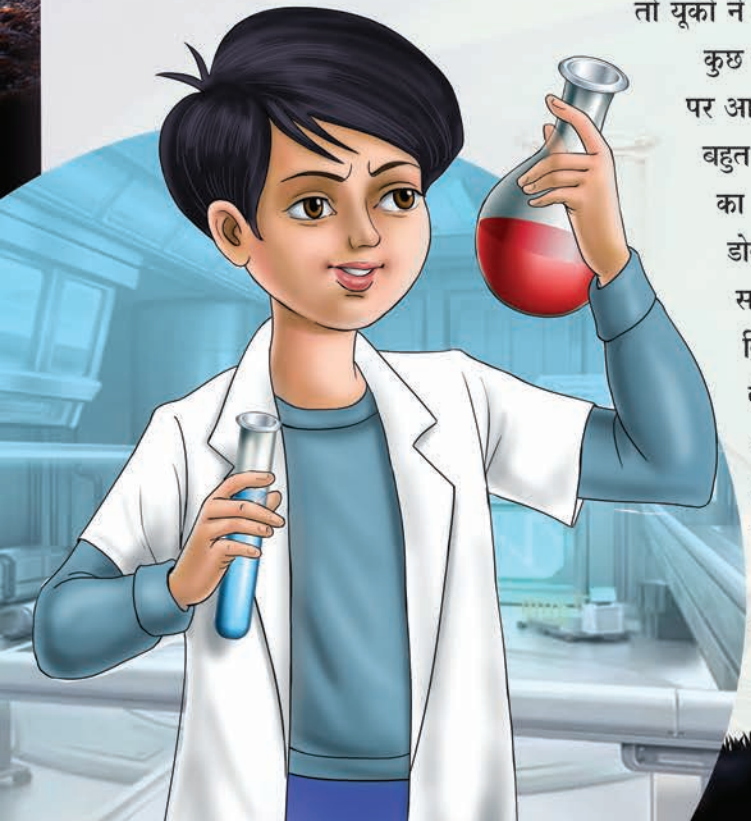

कुछ समय पहले डोलोमैक्स देश ने ज़ेन्डार देश पर आक्रमण किया था। ज़ेन्डार देश के सैनिकों ने बहुत ही शूरवीरता के साथ डोलोमैक्स के सैनिकों का सामना किया था। लेकिन सेना का शौर्य डोलोमैक्स की टेक्निकल ताकत के सामने कम साबित हुआ। हर बीतते दिन ऐसा लग रहा था कि डोलोमैक्स देश ज़ेन्डार देश पर कब्जा कर लेगा और ऐसे समय में यूको के प्रयोग की सफलता युद्ध के परिणाम के लिए एक टर्निंग पॉइन्ट (निर्णयात्मक) साबित हो सकती थी।

यूको, ज़ेन्डार के किंग, मार्क्स से मिलने गया। किंग ने बहुत ध्यान से यूको की बात

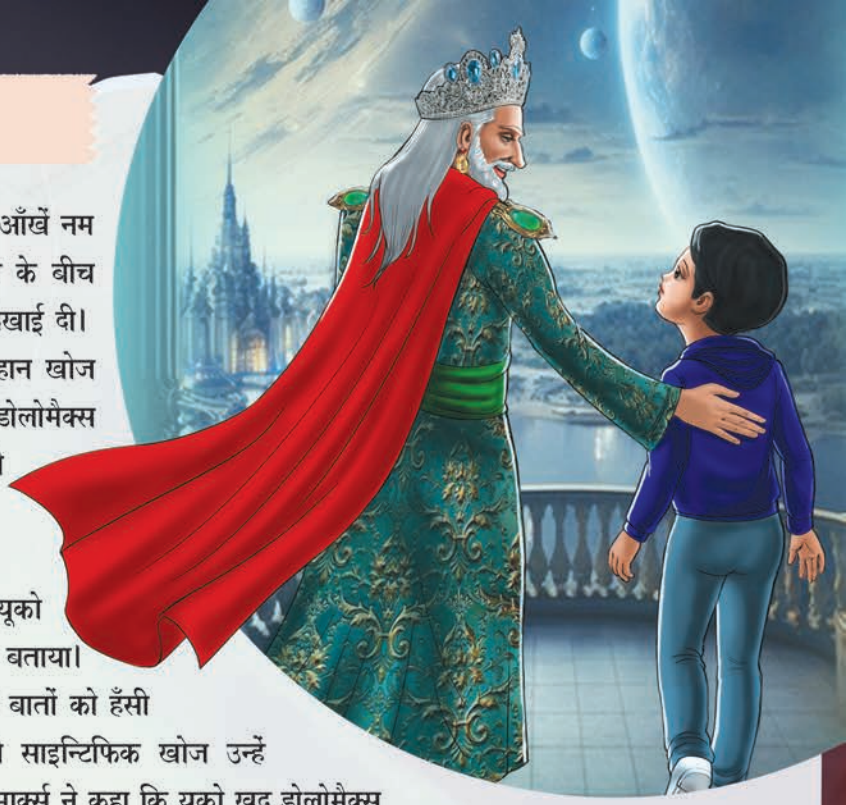

सुनी। बात पूरी होने पर किंग की आँखें नम हो गईं। भीषण युद्ध के अंधकार के बीच किंग को आशा की एक किरण दिखाई दी।

'शाबाश यूको! तुमने एक महान खोज की है। मुझे विश्वास है कि अब डोलोमैक्स के किंग कज़ान हमारी बात सुनने को तैयार हो जाएँगे।' मार्क्स ने यूको का कंधा थपथपाया।

मार्क्स ने किंग कज़ान को यूको द्वारा की गई खोज के बारे में बताया। लेकिन किंग कज़ान ने मार्क्स की बातों को हँसी में उड़ा दिया, क्योंकि यूको की साइन्टिफिक खोज उन्हें असंभव लगी। लेकिन जब किंग मार्क्स ने कहा कि यूको खुद डोलोमैक्स आकर अपनी खोज का सबूत दे सकता है, तब किंग कज़ान को विश्वास हुआ।

किंग कज़ान के आश्वस्त हो जाने पर किंग मार्क्स ने किंग कज़ान के सामने दो शर्तें रखीं -

१. यूको का प्रयोग पूरे सुरेनिस प्लैनिट में लाइव दिखाया जाए और

२. अगर प्रयोग सफल होता है तो युद्ध रोक दिया जाए।

कज़ान ने सोचा, 'अभी शर्तों को मानने में क्या हर्ज है? आखिरकार बाजी तो मेरे हाथ में ही है न।'

'आपकी शर्तें हमें मंजूर हैं।' कज़ान ने मार्क्स को वीडियो कॉल पर कहा, 'लेकिन यूको यहाँ अकेला ही आएगा। उसे लेने के लिए हम फ्लाइट भेजेंगे।'

मार्क्स ने कज़ान की बात मान ली।

जब यह खबर ज़ेन्डार देश में फैली तो हाहाकार मच गया। 'हमारा छोटा सा यूको अकेला डोलोमैक्स कैसे जाएगा?! कज़ान तो क्रूर है, यदि उसने हमारे यूको को बंदी बना लिया तो?' एक तरफ ज़ेन्डार देश में यूको के लिए प्रार्थनाएँ की जाने लगीं, तो दूसरी तरफ डोलोमैक्स देश के लोग यूको का मजाक उड़ाने लगे। डोलोमैक्स में किसी को भी यूको की वैज्ञानिक खोज पर विश्वास नहीं था।

किंग मार्क्स ने यूको को आश्वासन दिया, 'यूको, तुम बिल्कुल चिंता मत करना। तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं होने दूँगा। भले ही तुम वहाँ अकेले जा रहे हो, लेकिन मैं और सभी देशवासी तुम्हारे साथ ही हैं।'

यूको ने प्रयोग के सारे साधन-सामग्री एक बैग में पैक किए। मन में साहस और दिल में युद्ध समाप्ति की

प्रार्थना पैक करके वह फ्लाइट में बैठ गया। बादलों के बीच से गुजर रही फ्लाइट के ट्रैन्स्पेरन्ट विन्डो ग्लास से जब यूको की नज़र गुलाबी और नारंगी रंग में रंगी हुई डोलोमैक्स की ऊँची-ऊँची आधुनिक बिल्डिंगों और गोल-गोल घुमावदार रास्तों पर पड़ी तो वह चकित रह गया। वह पहली बार डोलोमैक्स जा रहा था।

फ्लाइट लैन्ड हुई और तुरंत ही एक शंकु आकार का शटल आया और यूको को स्टेडियम ले गया। किंग कज़ान, उनका स्टाफ और डोलोमैक्स के हजारों देशवासी यूको की राह देख रहे थे। इस स्टेडियम में यूको को अपना एक्सपेरिमन्ट करके दिखाना था।

इतने सारे लोगों को देखकर यूको को थोड़ी घबराहट हुई। लेकिन तभी उसे किंग मार्क्स के कहे हुए शब्द याद आए, 'मैं तुम्हारे साथ ही हूँ।' और उसे हिम्मत आ गई।

यूको ने सबसे पहले किंग कज़ान और ऑडियन्स को उसे यह मौका देने के लिए 'थैन्क यू' कहा। इसके बाद उसने सुरेनिस प्लैनिट के वासियों का अभिवादन किया। यह प्रोग्राम हर जगह लाइव दिखाया जा रहा था। यूको ने आगे कहा, 'ज़ेन्डार देश में कई प्रॉब्लम्स हैं और उसकी तुलना में डोलोमैक्स देश में नहीं के बराबर हैं। लेकिन एक प्रॉब्लम है जो ज़ेन्डार और डोलोमैक्स दोनों देशों में कॉमन है। और वह है - पीने का लिक्विड। सुरेनिस प्लैनिट के वासियों के शरीर को जो लिक्विड सूट करता है, उस लिक्विड की दोनों देशों में कमी है। हमें यह लिक्विड दूसरे देशों से इम्पोर्ट करना पड़ता है। मेरे साइन्स एक्सपेरिमन्ट द्वारा मैंने हवा से गैस ग्रहण करके यह लिक्विड बनाया है। अब हमें कभी भी इस लिक्विड की कमी नहीं होगी।'

यूको ने अपना ब्लू-ग्रीन फ्लास्क टेबल पर रखा और सफलतापूर्वक एक्सपेरिमन्ट करके दिखाया। पूरा स्टेडियम 'वाह-वाह' की आवाजों से गूँज उठा। यूको ने सबसे पहले वह लिक्विड खुद पिया उसके बाद आसपास के लोगों को कुछ नंबर्स बताए जो यह साबित करते थे कि यह वही पीने का लिक्विड है।

यह देखकर किंग कज़ान की आँखें खुली की खुली रह गईं। टेक्नोलॉजी तो उसे मिलनी ही थी, लेकिन उसके क्रूर मन में विचार आया कि वह यूको को अपने देश में ही रख लेगा जिससे भविष्य में उसकी साइन्टिफिक खोज का लाभ उठा सके।

एक तरफ कज़ान यूको को रोकने की युक्तियाँ सोच रहा था, तो दूसरी ओर डोलोमैक्स के लोग यूको की तारीफों के पुल बाँध रहे थे। ये वही लोग थे जो कुछ समय पहले यूको का मजाक उड़ा रहे थे।

यूको ने बड़ी विन्रमता से किंग कज़ान से निवेदन किया, 'इस टेक्नोलॉजी की ज़रूरत जितनी हमारे देश को है उतनी ही डोलोमैक्स को भी है। किंग कज़ान, मैं टेक्नोलॉजी तो आपको दे दूँगा, लेकिन अब आप युद्ध बंद करवा दीजिए।'

किंग कज़ान जोर से हँसने लगे और तुरंत ही लाइव प्रोग्राम बंद करवा दिया। यूको को पकड़कर किले में ले जाने का आदेश दिया। कज़ान का युद्ध रोकने का कोई इरादा ही नहीं था। उसे तो ज़ेन्डार पर कब्जा करना था।

जब डोलोमैक्स की जनता को कज़ान के क्रूर इरादों के बारे में पता चला, तो उन सभी ने मिलकर एक अनोखी क्रांति की। आधी जनता ने नारे लगाकर यूको को छुड़ाने का प्रयत्न किया, तो बाकी की जनता ने हृदय से प्रार्थना करके छोटे साइन्टिस्ट को सपोर्ट किया।

'जो बालक अकेला चलकर हमें पीने का लिक्विड बनाने का फार्मूला देने आया है, उस बालक को बंदी कैसे बनाया जा सकता है? उसे धोखा कैसे दिया जा सकता है?' कज़ान को युद्ध चालू रखने के लिए सैनिकों की ज़रूरत थी। लेकिन डोलोमैक्स के सैनिकों ने हथियार नहीं उठाए। किंग कज़ान के दो-चार वफादार साथियों को छोड़कर कोई भी उसका साथ देने को तैयार नहीं था। अतः आखिरकार उसे हार माननी पड़ी।

जब किंग मार्क्स यूको को ज़ेन्डार ले जाने के लिए आए, तब जाते समय किसी ने यूको से पूछा, 'तुम्हें यहाँ अकेले आने में डर क्यों नहीं लगा?'

यूको ने कहा, क्योंकि किंग मार्क्स ने मुझसे कहा था कि वे मेरे साथ हैं। और जब मैं यहाँ आया तब मेरे देश के लोगों की भावना थी कि 'युद्ध रुके और शांति फैले', यह भावना मेरे साथ ही थी। यहाँ आने के बाद मुझे डोलोमैक्स की जनता का भी सपोर्ट मिला। इतना पॉज़िटिव सपोर्ट हो, तो फिर किसका डर?

उस दिन न केवल ज़ेन्डार और डोलोमैक्स की जनता को, बल्कि पूरे सुरेनिस प्लैनिट को समझ में आ गया कि पॉज़िटिव बात को सपोर्ट करने में कितना जबरदस्त बल है!

सॉल्व द केस

डिटेक्टिव बनकर एक केस सॉल्व करो। निम्नलिखित घटना में किसने किया, किसने करवाया और किसने अनुमोदना किया है, यह ढूँढ़कर सामने वाले पन्ने में आपका जवाब लिख उसका फोटो खींच कर हमें ९३१३६६५५६२ भेजना मत भूलना।

लंदन के एक धनवान बिज़नेसमैन मिस्टर स्मिथ ने पेरिस के हीरे के व्यापारी मिस्टर वर्मा से पंद्रह करोड़ का हीरा खरीदा। इस हीरे को बैंक के लॉकर में सुरक्षित रख दिया गया।

इस बात की जानकारी मिस्टर खत्री को हुई। उन्होंने रॉकी को फोन किया और कहा, 'रॉकी, तुम्हें इस हीरे को मेरे पास पहुँचाना है। असली हीरे की जगह नकली हीरा रख देना। तुम्हें तुम्हारा इनाम मिल जाएगा।'

रॉकी ने बड़ी चतुराई से मिस्टर खत्री का काम कर दिया। दूसरे दिन लंदन के सभी टेलिविज़न चैनल पर एक ही चर्चा हो रही थी, इतनी सिक्युरिटी होने के बावजूद यह चोरी किसने और किस तरह की?

मिस्टर पाठक ने जब टी.वी. पर यह न्यूज़ देखा तब उन्होंने मन में सोचा कि 'इन पैसेवालों को तो लूटना ही चाहिए। लोगों की मेहनत का पैसा हजम करके बैठे हैं।'

इस घटना के कैरक्टर के नाम हैं - मिस्टर स्मिथ, मिस्टर वर्मा, मिस्टर खत्री, रॉकी और मिस्टर पाठक। इनमें से योग्य नाम नीचे दिए गए टेबल में लिखो।

किसने किया?

किसने करवाया?

किसने अनुमोदना किया?

ऐसी बातों को सपोर्ट?

क्लास शुरू होने में कुछ समय था। तेज क्लासरूम के बाहर खड़ा था। तभी वहाँ लक्ष आता है।

तेज, तुमने सुना? प्रिन्सिपल सर ने मनोज सर को निकाल दिया।

वाउ! सुपर्ब! निकालना ही चाहिए था।

कुछ देर में ज़िशान आया,

यार ज़िशान, तुम हमारी क्लास के लिए बहुत लकी साबित हुए। कल तुम्हारा पहला दिन था और आज मनोज सर का आखिरी दिन!

सच, लेकिन जाते-जाते मनोज सर ने तुम्हें भी उनका फेमस प्रसाद तो दे ही दिया।

तीनों क्लास में गए।

क्लास में,

आज मेरा आखिरी दिन है। 'इंडिया टैलेन्ट सर्च एग्ज़ाम' के लिए सभी को ऑल द बेस्ट।

हमें इतना परेशान करने के बाद कैसी एक्टिंग कर रहे हैं। इन्हें तो ड्रामा स्कूल जॉइन कर लेना चाहिए।

दोनों हँस पड़े।

शाम को तेज के घर पर,
क्या बात है? आज तेज और लक्ष की जोड़ी इतनी खुश क्यों है?
क्योंकि, आज क्लास के विलन यानी कि मनोज सर को प्रिन्सिपल ने निकाल दिया।
इस बात पर खुश होना चाहिए क्या? किसी की जॉब गई और तुम लोग खुश हो रहे हो?
अरे, इसमें हम क्या कर सकते हैं? हमने उन्हें जॉब से नहीं निकाला। हमने कोई शिकायत करके उन्हें निकलवाया भी नहीं।
हम तो बस प्रिन्सिपल सर के निर्णय को सपोर्ट कर रहे हैं।
यह भी गलत ही कहलाता है। गलत काम को सपोर्ट करने से कभी अच्छा रिज़ल्ट नहीं मिलता।

ओके। ठीक है, ठीक है। अब पढ़ने दो। हमें टैलेन्ट सर्च एग्ज़ाम में अच्छा रिज़ल्ट लाना है।
कई महीनों तक तेज और लक्ष ने एग्ज़ाम की तैयारी की। लेकिन, रिज़ल्ट के दिन दोनों का चेहरा उतरा हुआ था।
रिज़ल्ट के दिन शाम को,
यह क्या? हम फेल हो गए और यहाँ पार्टी क्यों मनाई जा रही है?
क्योंकि सुहास अंकल का बेटा व्योम टैलेन्ट सर्च एग्ज़ाम में पास हो गया है और उसे आगे की पढ़ाई के लिए स्कॉलरशिप मिली है।
कन्ग्रैचुलेशन्स व्योम!
थैन्क यू, दीदी। लेकिन यह तो सेन्ट फ्रैन्सिस स्कूल के मनोज सर के कारण हुआ है।

हें? हमारे स्कूल के मनोज सर?!
हाँ। वे बहुत सख्त हैं। लेकिन अगर उन्होंने हमें इतनी अच्छी तरह नहीं पढ़ाया होता तो मैं पास नहीं हुआ होता। ऐन्ड थैन्क यू ज़िशान ऑल्सो।
हाँ, अगर ज़िशान के पापा ने मनोज सर को तुम लोगों के स्कूल से नहीं निकलवाया होता तो वे हमारा स्कूल किस तरह जॉइन करते? ओके, अब मैं चलता हूँ। मुझे वहाँ बुला रहे हैं।
ज़िशान?
आज अफसोस हो रहा है कि हमने सर को स्कूल से निकालने की बात को सपोर्ट किया।
कुछ देर बाद तेज के पड़ोसी, अश्विन अंकल आए,
आप जैसे यंग लोगों को ऐसे विचित्र सलेब्रिटिज़ का विरोध करना चाहिए।
नेगेटिव बात को सपोर्ट करने से क्या फायदा?
हाँ, यू आर राइट। दीदी ने सही कहा था कि गलत बात को सपोर्ट करने से कभी अच्छा रिज़ल्ट नहीं मिलता।
अंकल, नेगेटिव बात का विरोध करने के बजाय पॉज़िटिव बात को, यानी कि पिज्ज़ा को सपोर्ट करें तो?!

दिए गए चित्रों को काटकर इस तरह चिपकाना है कि एक चित्र उस लाइन में एक बार ही आए।

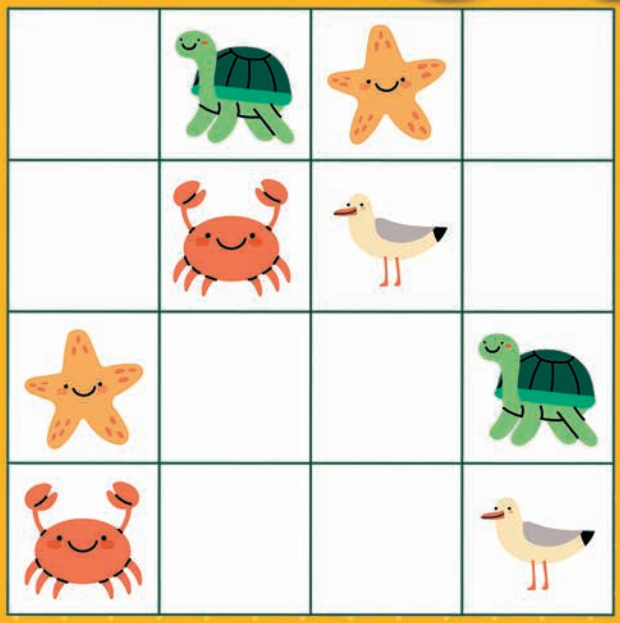

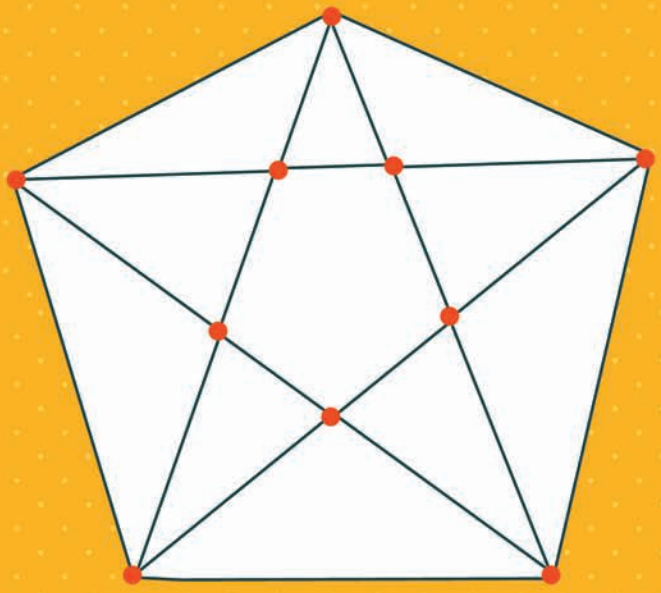

दिए गए चित्र में कितने त्रिकोण हैं, गिनो।

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

पाटलीपुत्र में दो भाई व्यापार करके अपनी जीविका चलाते थे। एक बार एक गुरु महाराज से धर्म की बात सुनकर दोनों ने दीक्षा ले ली।

दोनों भाईयों में से एक ने पढ़ने की कोशिश ही नहीं की और दूसरे ने खूब पढ़ाई की और आचार्य की पदवी प्राप्त की। उनके ५०० शिष्य बने। वे साधुओं को प्रवचन देते थे। समय-समय पर साधु अपने प्रश्न लेकर आचार्य के पास आते थे। कई बार तो आचार्य को सोने के लिए भी समय नहीं मिलता था।

एक बार आचार्य के मन में विचार आया, 'मैंने शास्त्रों की पढ़ाई की, इसी कारण यह दुःख है। आराम भी नहीं मिलता। मेरा अनपढ़ भाई कितना सुखी है। किसी तरह की चिंता नहीं। वह आराम से खा-पीकर सोता है। सचमुच, पढ़ाई करनी ही नहीं चाहिए। तो सुखी रह सकते हैं।' इस प्रकार अनजाने ही उन्होंने 'अनपढ़ रहने में सुख है' इस बात का अनुमोदन कर दिया।

एक दिन सभी साधु बाहर गए थे। इस मौके को भागने का अवसर जानकर वे नगर के बाहर चले गए। वहाँ कोई उत्सव मनाया जा रहा था। एक खंभे को सजाया गया था और उसके चारों ओर लोग बैठे थे। आचार्य एक तरफ खड़े होकर यह सब देख रहे थे।

उत्सव खत्म होने पर खंभे से वस्त्र और आभूषण उतारकर लोग चले गए। खंभा उजाड़ हो गया। वहाँ कौवे आकर 'काँव-काँव' करने लगे। यह देखकर आचार्य महाराज को विचार आया, 'लोगों की टोली थी इसलिए खंभे को सजाया था। लोगों से ही उसकी शोभा थी। लोग चले गए तो खंभा अस्थि-पंजर जैसा लग रहा है। उसी तरह हमारे परिवार से ही हमारी शोभा है। अकेले की कोई शोभा नहीं होती। मेरे पास मेरे शिष्यों का परिवार है। उनसे भाग छूटने का मेरा ख्याल कितना गलत है।' वे वापस उपाश्रय में आ गए। उन्होंने तपस्या की और मृत्यु के बाद देवगति में गए।

देवलोक का आयुष्य पूरा करके एक चरवाहे के यहाँ उनका जन्म हुआ। एक दिन, परिवार में कोई घटना घटने से उन्हें दीक्षा लेने की प्रेरणा हुई।

दीक्षा लेने के बाद उन्होंने शास्त्रों का अध्ययन प्रारंभ किया। परन्तु पूर्वजन्म में 'अनपढ़ रहने में सुख है' इस बात का जो अनुमोदन किया था, उसके कारण इस जन्म में उन्हें शास्त्र का पाठ याद रखने में बहुत परेशानी होती थी। किसी भी तरह उन्हें याद रहता ही नहीं था।

मुनि ने गुरु को अपनी याद न रहने की परेशानी के बारे में बताया। गुरु ने उन्हें एक मंत्र का जाप करने को कहा। इस मंत्र का अर्थ था कि 'किसी बात पर गुस्सा मत करना (परेशान मत होना) या किसी बात पर राग मत करना। (बहुत प्रिय मत लगाना)'

मुनि गुरु महाराज द्वारा दिए गए मंत्र का रटन करने लगे। दिन-रात बस एक ही धुन 'मा रुस मा तुस', मंत्र का जाप करते-करते उनकी जिह्वा थक गई। और मूल मंत्र के बदले 'मास तुस मास तुस' याद रह गया। इसलिए वे 'मास तुस मास तुस' का रटन करने लगे।

यह सुनकर सब हँसने लगे। फिर भी मुनिने गुरु महाराज का उपदेश ध्यान में रखते हुए किसी पर गुस्सा नहीं किया और क्षमा रखी। दूसरे मुनिओं ने उनका नाम 'मासतुस मुनि' रख दिया। लेकिन मंत्र का अर्थ उनके ध्यान में था।

वह मंत्र रटते-रटते उन्होंने राग-द्वेष जीत लिए और उन्हें केवलज्ञान हो गया। आयुष्य पूर्ण करके मासतुस मुनि मोक्ष चले गए।

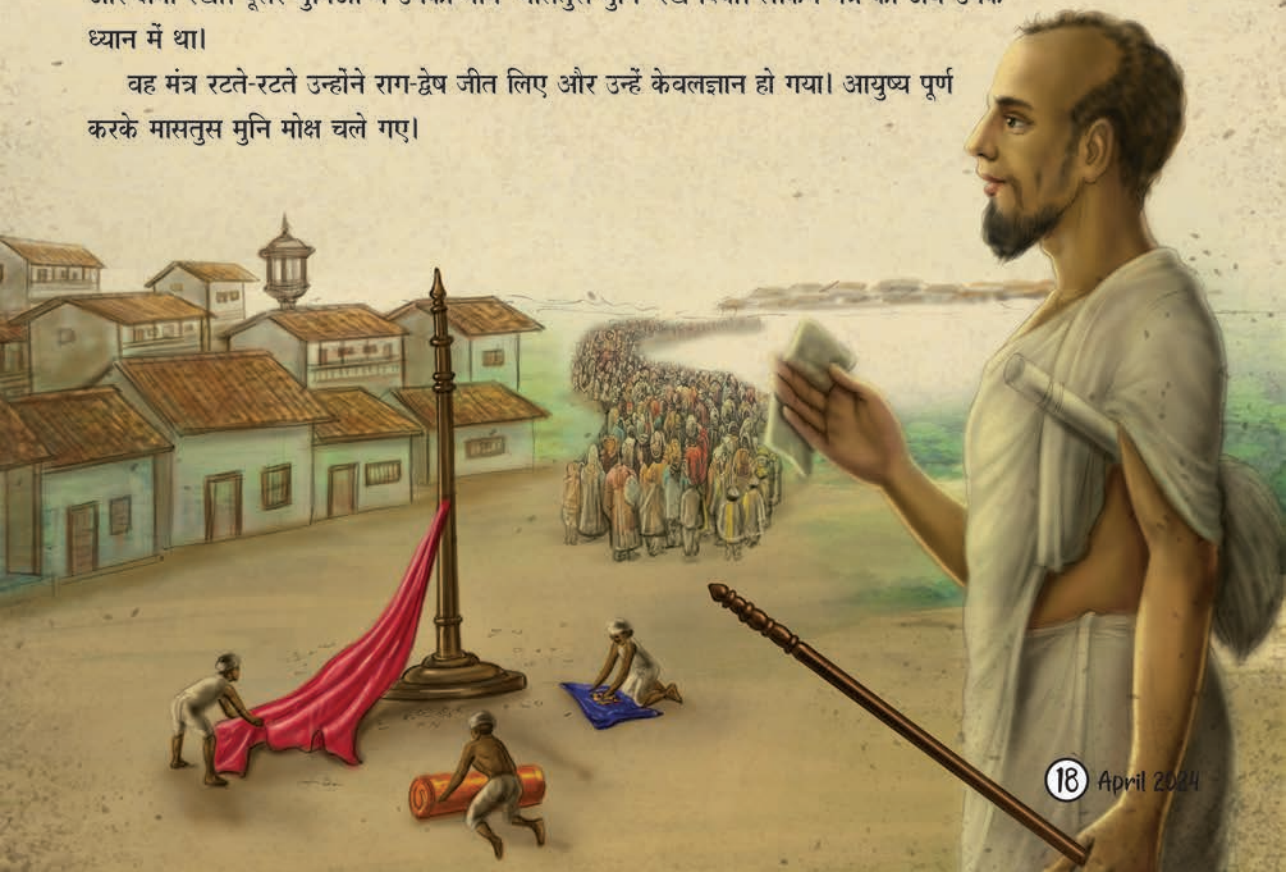

AALOO CHILLY

चिली तो समझ गया कि आलु किस बारे में बात कर रहा है। क्या चलता रहेगा और क्या उलझ गया है? अगले महीने आलु-चिली को किसकी तैयारी करनी है? जानने के लिए नेक्स्ट मंथ का इंतज़ार करें।

Akram Express

April 2024
Year : 12, Issue : 01
Conti. Issue No.: 133

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

Lmht

Bmht

Summer Camp 2024

अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए स्कैन कीजिए।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशिप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ૮૧૫૫૦૦૭૫૦૦ पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on Behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhtral-Pratappura Road, At-Chhatral, Tal. Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.

DBF • अडालज